उत्पादन खर्च बढ़ने से कोरूगेटेड बॉक्स उद्योग पर छाये संकट के बादल

कोलकाता. पिछले दो महीने में क्राफ्ट पेपर मिलों द्वारा निरंतर भाव में वृद्धि किये जाने और अन्य कन्वर्जन इनपुट कास्ट बढ़ने से कोरूगेटेड बॉक्स उद्योग पर संकट के बादल छा गये हैं. देसी और आयातित वेस्ट पेपर का भाव पिछले दो महीने में प्रति मिट्रिक टन 4500 से 5000 तक बढ़ गया है. इसके साथ ही भारत के उत्पादक यूएसए और यूरोप से वेस्ट पेपर का आयात करते हैं, लेकिन लॉकडाउन में उत्पादन बंद रहने से इस समय वेस्ट पेपर की आपूर्ति की तुलना में मांग अधिक है. दूसरे विदेशी बाजारों में वेस्ट पेपर और फिनिस्ड प्रोडक्ट की जो कुछ भी आपूर्ति उपलब्ध थी, वह चाइनीज मिलों ने खरीद ली है. क्राफ्ट पेपर मिलों ने बताया कि कोविड-19 लॉकडाउन अवधि में भारतीय पेपर मिलों द्वारा पर्याप्त माल आयात न कर सकने के कारण इस समय जरूरी ग्रेड का माल यहां कम है. भारत के 350 से अधिक ऑटोमेटिक कोरूगेटर और 10,000 से अधिक सेमी ऑटोमेटिक यूनिटें कोविड-19 के कारण भारी परेशानी से जूझ रही हैं. यह उद्योग छह लाख से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है. उद्योग का वार्षिक उत्पादन 60 लाख टन का है और कुल बाजार 24000 करोड़ रुपये का है. इंडियन कोरूगेटेड केस मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (इकमा) के प्रमुख संदीप वाधवा ने सभी क्राफ्ट पेपर मिल्स एसोसिएशनों से भाव में स्थिरता और अनुशासन बनाये रखने का अनुरोध किया है. वर्तमान विषम परिस्थिति में सभी क्राफ्ट पेपर मिलों का और हमारे ग्राहकों का सहयोग अत्यंत जरूरी है. इकमा के उप प्रमुख हरीश मदन ने कहा कि उत्पादन खर्च में 18 से 20 प्रतिशत की वृद्धि होने से कोरूगेटेड बॉक्स उद्योग का टिकना मुश्किल हो गया है. इन परिस्थितियों में बड़े एफएमसीजी ब्रांड मालिकों सहित बॉक्स के उपभोक्ताओं के लिए पर्याप्त समर्थन देना जरूरी है.